www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सचित्र बाल कथाएँ

श्रेष्ठ कमाई

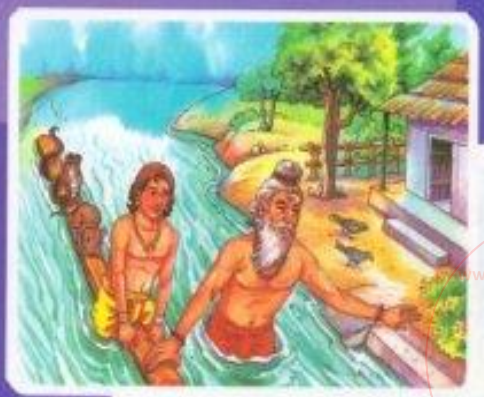

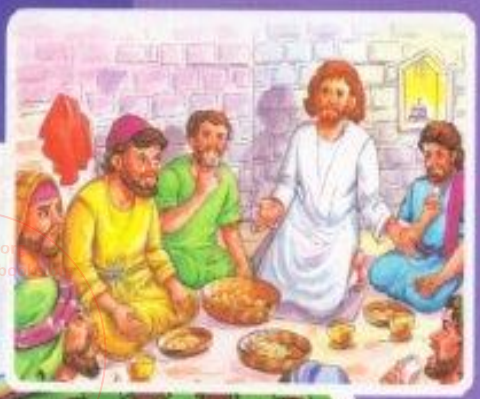

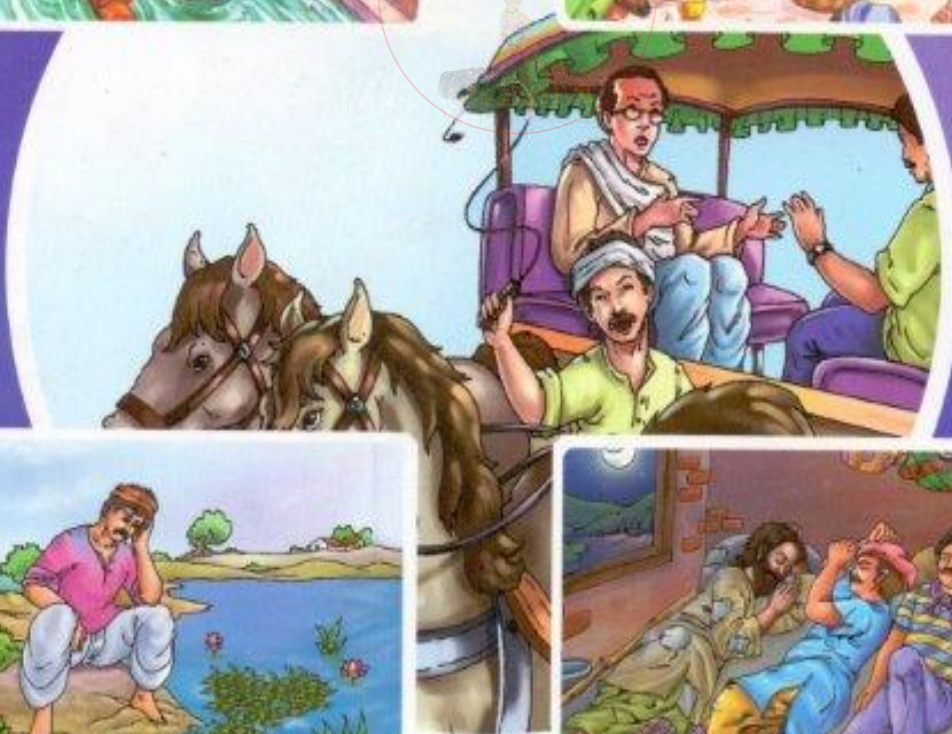

12

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

झोलियों की अदला-बदली

ब्रह्मा जी ने प्राणियों को बनाकर उनकी इच्छा पूछी। मनुष्य ने कहा—"मैं बुद्धिमान तो बहुत हूँ पर चाहता हूँ और भी आगे बढ़ूँ और ऐसा रहूँ, जिसकी समता और कोई न कर सके।" ब्रह्मा जी ने उसे दो झोलियाँ दीं और कहा—"इन्हें गले में लटकाए रहना, एक झोली आगे रखना एक झोली पीछे रखना। दूसरों की विशेषताएँ ढूँढ़ना और उन्हें आगे वाली झोली में भरते जाना और अपनी विशेषताओं पर ध्यान न देना, उन्हें बिना देखे पीछे की झोली में रखना। तुम्हारी बुद्धिमत्ता बढ़ती चलेगी।"

मनुष्य प्रसन्न हो गया पर झोलियों के आगे-पीछे वाला निर्देश भूल गया कि कौन कौन सी झोली में क्या रखना है ? उसने आगे की झोली पीछे तथा पीछे की झोली आगे लटका ली। फलतः अपने गुणों को ही बखानता और दूसरों से कुछ भी न सीखता।

वह बुद्धिमान तो रहा, पर मात्र अपनी दृष्टि में। दूसरों ने उसे मूर्ख ही ठहराया। यह गड़बड़ झोलियों की अदला-बदली के कारण हो गई।

जो विवेकवान यह क्रम ठीक कर लेता है वह ब्रह्मा जी के वरदान का लाभ पाता है। वह बुद्धिमान तो बनता ही है, दूसरों से भी सदा आदर पाता है।

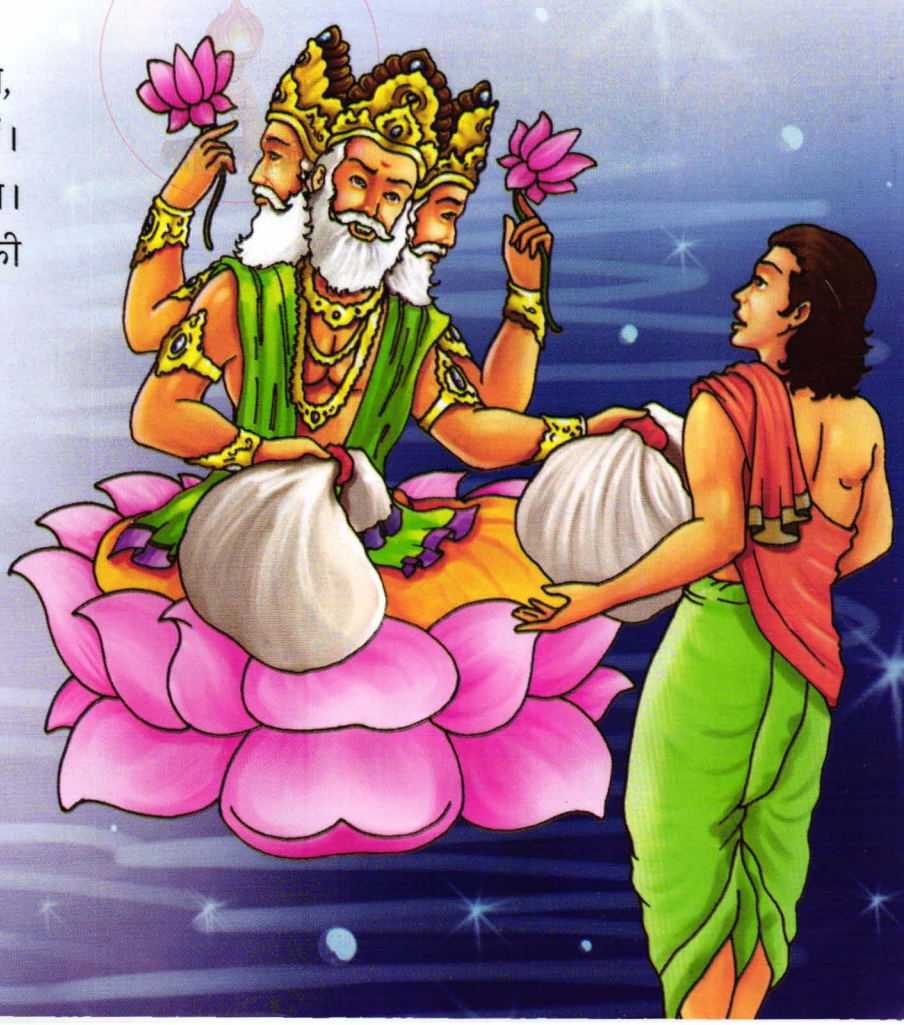

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वावलंबी बनो

इंग्लैंड में गली-चौराहों पर भारत की भाँति कुली नहीं मिलते। एक सज्जन के पास बिस्तर, सामान आदि ज्यादा था। वे कुली को आवाज लगा रहे थे।

दूसरे सज्जन ने उनकी कठिनाई को समझा और उनका सामान बग्घी पर लदवा दिया। उन सज्जन ने कुली की मजदूरी पूछी तो उनने अपना परिचय देते हुए कहा कि वे वहाँ की एक बैंक के मैनेजर हैं। उनकी कठिनाई देखकर अपनी गाड़ी एक ओर खड़ी करके सहायता के लिए आए हैं।

"अरे भाई आप से क्या मजदूरी लें।"—इतना कहकर वे अपने काम पर चल दिए।

भारतीय सज्जन ने ब्रिटिश समाज में दृढ़ता से जमे बैठे सुसंस्कारों की झलक एवं स्वावलंबन की महत्ता को उस दिन सही अर्थों में समझा। उन्हें अपने ऊपर बड़ी लज्जा आई। उन्होंने संकल्प लिया कि भविष्य में वे अपना प्रत्येक कार्य स्वयं ही करेंगे। अपने सामान का बोझा स्वयं उठाने में किसी भी प्रकार के अपमान का अनुभव न करेंगे। अपना कार्य स्वयं करना गौरव की बात है, लज्जा की नहीं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रेष्ठ कमाई

एक सराय के एक ही कमरे में तीन मुसाफिर आकर ठहरे । एक था भिखारी, दूसरा किसान, तीसरा चोर। रात्रि में तीनों ने अपनी-अपनी गठरी ऊपर खूँटी पर टाँग दी और सो गए। एकदम शांत वातावरण देखकर पोटलियों की संपदा आपस में बात करने लगीं और एकदूसरे में घुल-मिल जाने की इच्छा प्रकट करने लगीं।

किसान की पोटली ने कहा—"मिलने में कोई आपत्ति नहीं, पर फिर ईमानदारी, नीति-निष्ठा और श्रमशीलता का भविष्य क्या होगा?"

चोर और भिखारी की पोटलियों ने अपनी हीनता समझी और चुप हो गईं।

परिश्रम और ईमानदारी से की गई कमाई ही प्रशंसनीय होती है। वही श्रेष्ठ होती है, उसी से समाज में सुख-शांति आती है।

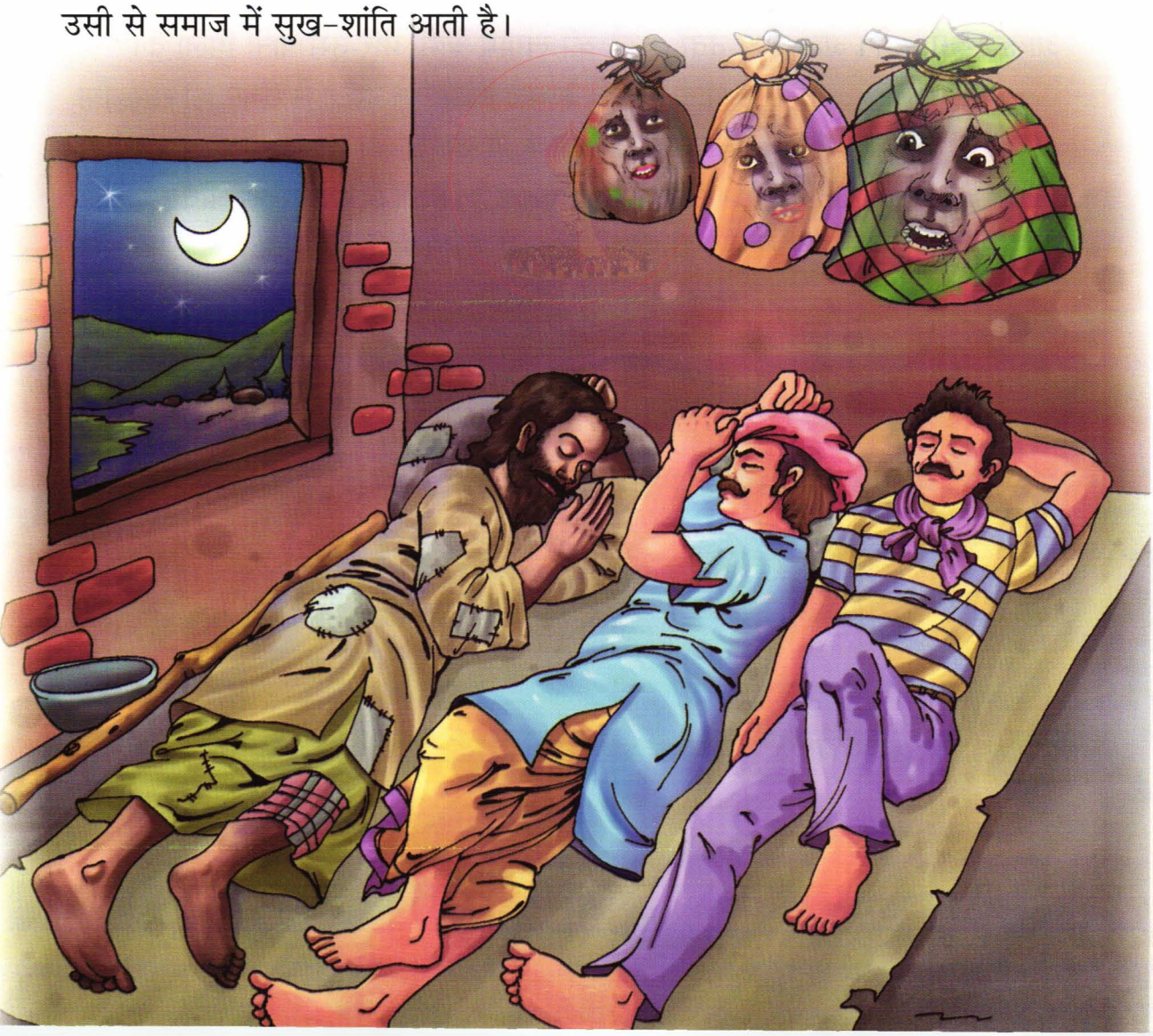

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसान की शिक्षा

एक घुड़सवार तेजी से अपना घोड़ा दौड़ा रहा था। रास्ते में घोड़े को प्यास लगी। घुड़सवार ने पानी के लिए इधर-उधर नजर दौड़ाई तो पाया कि एक कुएँ पर रहट चल रही थी। घुड़सवार ने घोड़े को पानी पिलाने के लिए इधर मोड़ा तो वह आवाज सुनकर बिदकने लगा। घोड़ा पीछे हटता, आगे बढ़ता ही न था। इस पर सवार ने अकड़कर किसान से कहा—"यह रहट की आवाज बंद करो।"

किसान ने रहट बंद कर दी। अब घोड़ा आगे तो बढ़ा पर तब तक नाली में पानी बहना ही बंद हो चुका था। सवार फिर अकड़ा—"पानी तो खोलो।"

किसान ने नम्रता से कहा—"पानी तभी बहेगा, जब रहट चले। रहट चलेगी तो आवाज होगी ही। आप नीचे उतरें, घोड़े की लगाम थामें और उसे पानी पिला दें।"

पानी पी लेने के बाद किसान ने नम्रता से सवार को समझाया कि कुछ पाने के लिए अनुशासन का क, ख, ग स्वयं से आरंभ करना पड़ता है। बिना अनुशासन के जीवन में छोटे से छोटा काम भी संभव नहीं है।

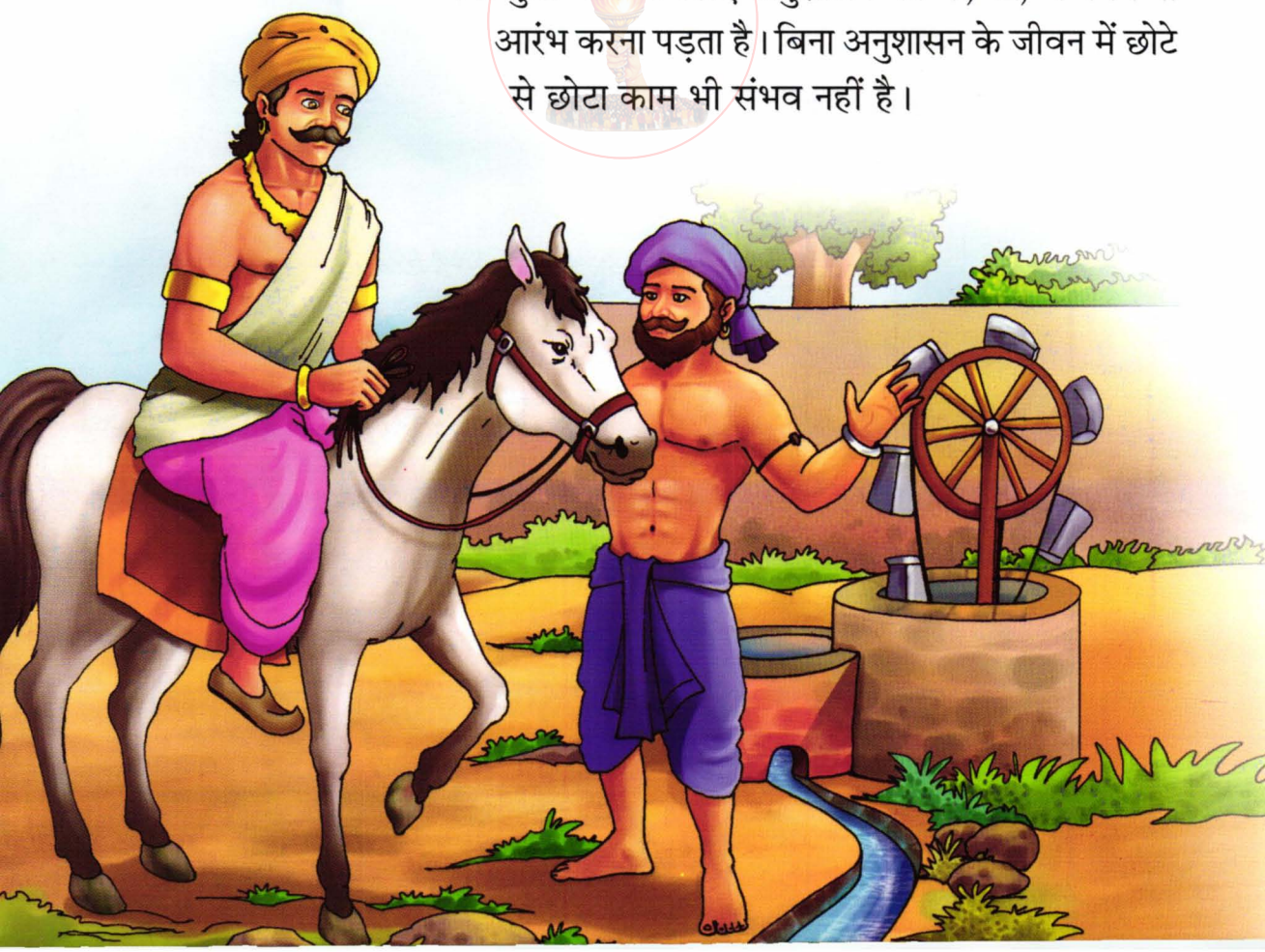

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छोटी वस्तु

ईश्वरचंद्र विद्यासागर एक व्यक्ति के यहाँ टाट के बोरे पर बैठे थे। उस व्यक्ति के पास बैठने के लिए एक टाट ही था।

एक बड़े आदमी बग्घी पर उधर से निकले और ईश्वरचंद्र को टाट के बोरे पर बैठा देखा तो उन्हें अपने साथ बिठाकर ले गए। उन्होंने कहा—''टाट के बोरे पर बैठने से आपकी बेइज्जती होती है।''

उन्होंने जवाब दिया—''इज्जत इतनी छोटी वस्तु नहीं है, जो बैठने की वस्तुओं से ही घटने-बढ़ने लगे।'' व्यक्ति की महानता कार्यों से देखी जाती है। किसका जीवन कितने आराम से बीतता है, यह बात तो बहुत छोटी होती है। अपने लिए तो सभी सुख-साधन जुटाते हैं। जो व्यक्ति दूसरों की सेवा परोपकार की भावना से करता है, वही महान है।

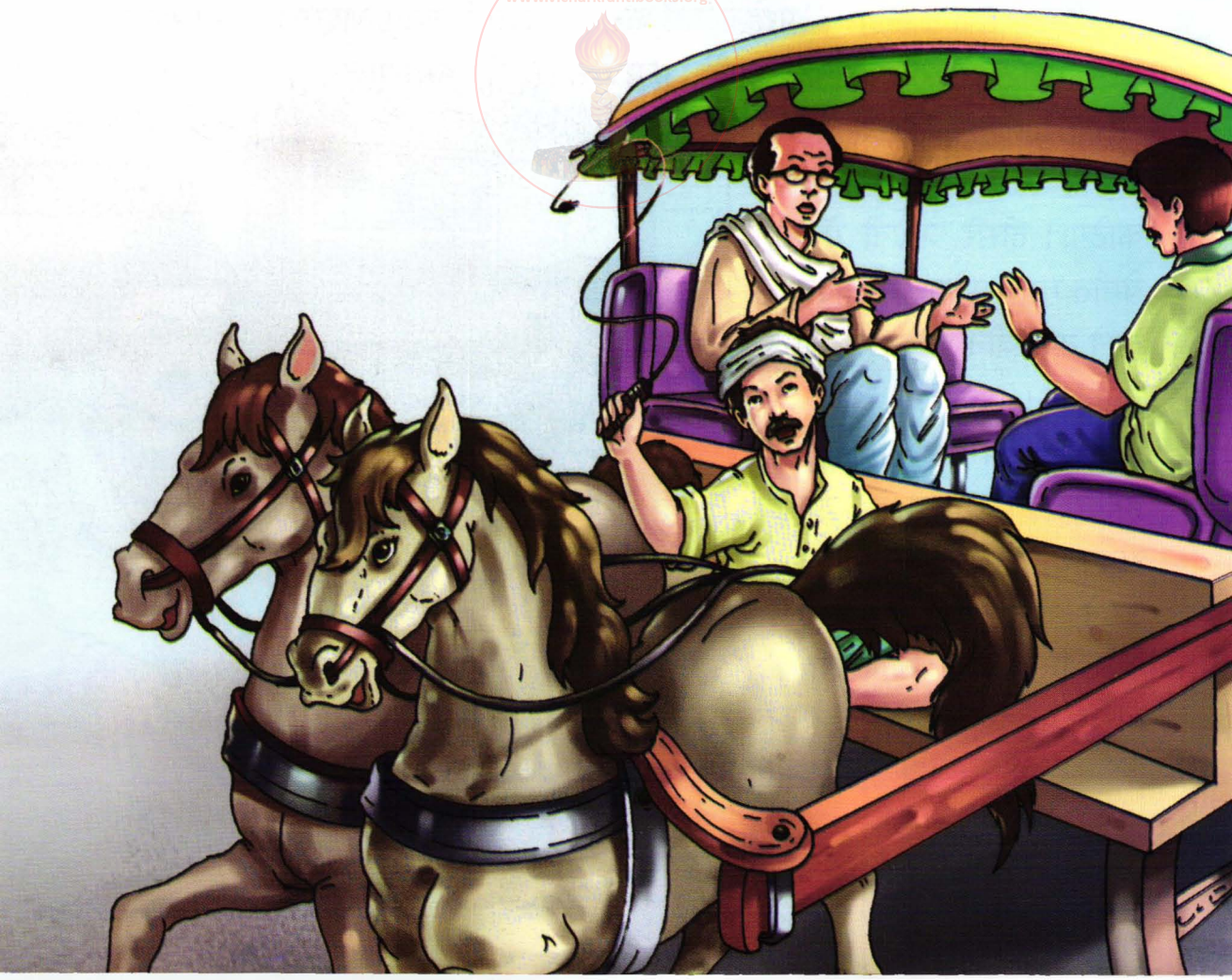

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दवा के तीन लाभ

एक खांसी का मरीज था, पर बहुत चटोरा इलाज कराता तो फिरता था पर किसी की औषधि से लाभ न होता था। एक नए चिकित्सक की प्रशंसा सुनकर उनके पास गया और बोला—"परहेज तो मुझसे न होगा, पर जो बताएँ सो खाता रहूँगा।"

चिकित्सक हँसोड़ था। उसने कहा—"जो जी में आए खाओ और मेरी दवा आजमाओ। तीन लाभ जरूर मिलेंगे।"

चटोरे ने पूछा—"तीन लाभ कौन से?" उत्तर मिला—"घर में चोर नहीं घुसेंगे। कुत्ते काटेंगे नहीं। बुढ़ापा आएगा नहीं। खाँसी ठीक होने न होने का वादा तो मैं नहीं कर सकता।" दवा लेने लगा। लाभ नहीं हुआ। जीभ पर काबू न होने से वह मनचाही चीजें खाता था। एक दिन पूछ बैठा—"खाँसी तो कम नहीं हो रही है तो जो तीन शर्तिया लाभ आपने बताए वे कैसे मिलेंगे?"

चिकित्सक ने कहा—"परहेज नहीं करोगे तो खाँसी बढ़ती जाएगी। रातभर खाँसने पर जागना पड़ेगा तो चोर नहीं आएँगे। कमजोरी बढ़ेगी, कमर झुक जाएगी, लाठी लेकर चलना पड़ेगा, सो डरकर कुत्ता नहीं काटेगा। तीसरे जवानी में ही बेमौत मरना पड़ेगा, सो बुढ़ापा आने तक जीने की जरूरत ही न पड़ेगी।

चटोरेपन से कितनी हानियाँ हो सकती हैं, यह सुनकर मरीज घबरा गया। उसने अपनी आदत सुधार ली और बिना दवा खाए ही अच्छा हो गया।

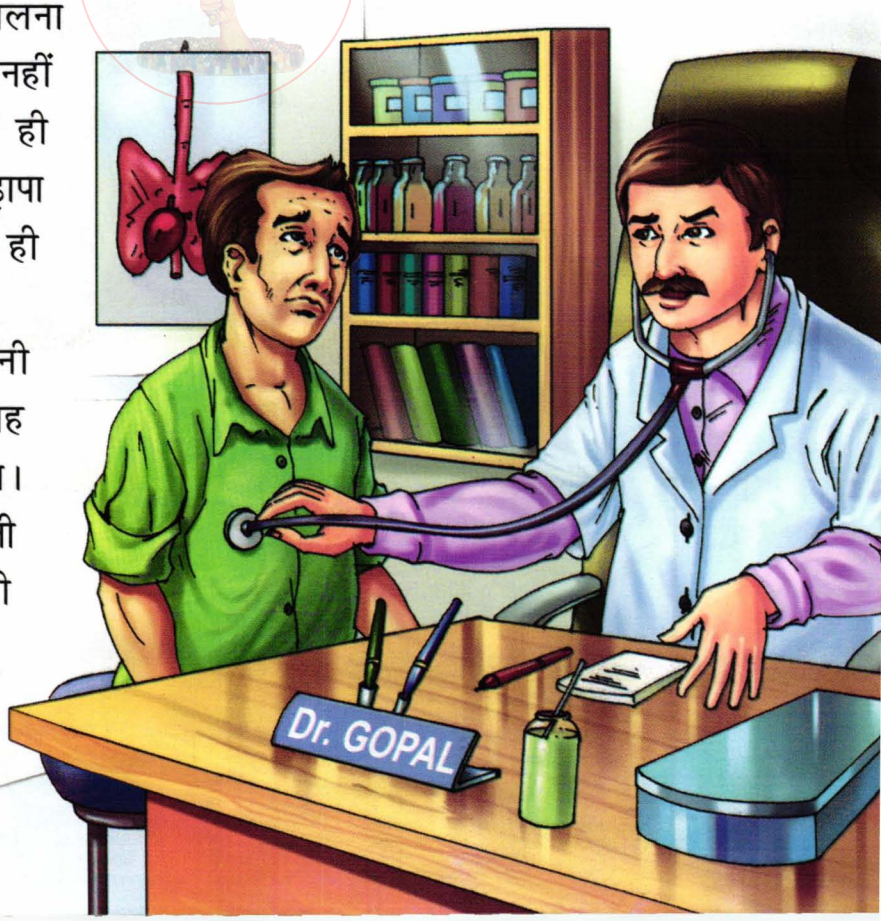

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रम का फल

''क्यों माँ! बबूल का पौधा लगा देने के बाद ज्यादा देख-रेख नहीं करनी पड़ती, वह अपने आप ही इतना बड़ा हो जाता है ?'' बच्चे के इस प्रश्न को सुनकर माँ ने कहा—''हाँ बेटा''। बच्चे ने फिर प्रश्न किया, ''और क्यों माँ, गुलाब छोटे-छोटे होते हैं, एक वर्ष में ही तैयार हो जाते हैं, तो भी उनके लिए पिताजी को दिन-रात परिश्रम करना पड़ता है। वह क्यों ?'' बच्चे ने फिर प्रश्न किया। इस बार माँ ने बच्चे की जिज्ञासा का भरपूर समाधान करते हुए कहा—''बेटे! श्रेष्ठ वस्तुएँ सदैव परिश्रम से मिला करती हैं। ऐसा न होता तो अच्छे व बुरे में अंतर ही क्या रह जाता ?''

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गधों का सत्कार

किसी समय एक जंगल में गधे ही गधे रहते थे। पूरी आजादी से रहते, भरपेट खाते-पीते और मौज करते।

एक लोमड़ी को मजाक सूझा। उसने मुँह लटकाकर गधों से कहा—"मैं चिंता से मरी जा रही हूँ और तुम इस तरह मौज कर रहे हो। पता नहीं कितना बड़ा संकट सिर पर आ पहुँचा है।"

गधों ने कहा—"दीदी, भला क्या हुआ, बात तो बताओ।" लोमड़ी ने कहा—"मैं अपने कानों सुनकर और आँखों देखकर आई हूँ। मछलियों ने एक सेना बना ली है और वे अब तुम्हारे ऊपर चढ़ाई करने ही वाली हैं। उनके सामने तुम्हारा ठहर सकना कैसे संभव होगा?"

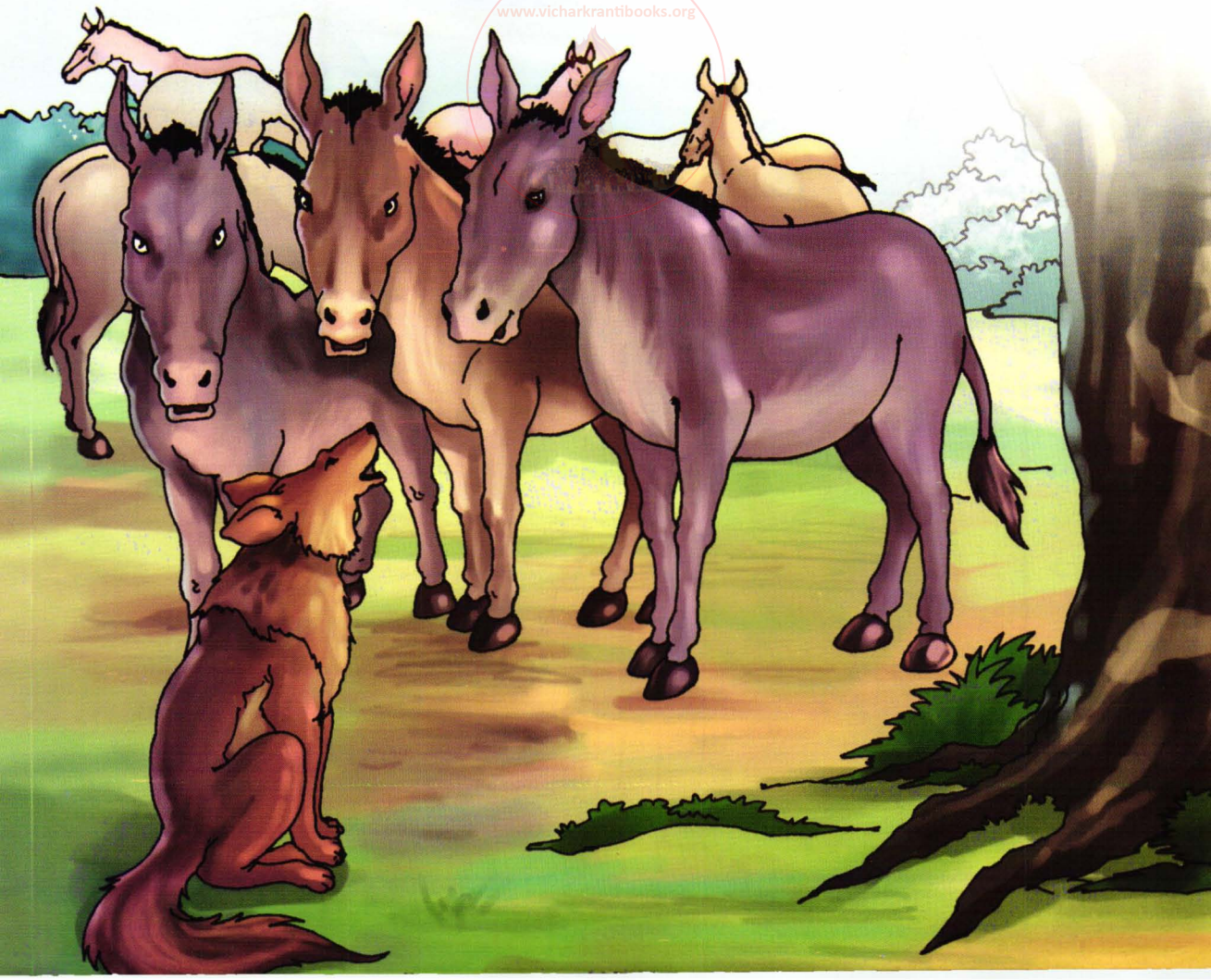

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गधे असमंजस में पड़ गए। उन्होंने सोचा व्यर्थ जान गँवाने से क्या लाभ? चलो कहीं और चलो। जंगल छोड़कर वे गाँव की ओर चल पड़े।

इस प्रकार घबराए हुए गधों को देखकर गाँव के धोबी ने उनका खूब सत्कार किया। अपने छप्पर में आश्रय दिया और गले में रस्सी डालकर खूँटे में बाँधते हुए कहा—"डरने की जरा भी जरूरत नहीं। मछलियों से मैं भुगत लूँगा। तुम मेरे बाड़े में निर्भयतापूर्वक रहो। तुम्हें केवल मेरा थोड़ा सा बोझ ढोना पड़ा करेगा।"

गधों की घबराहट तो दूर हुई पर उसकी महँगी कीमत बोझा ढो-ढोकर चुकानी पड़ी।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नुकसान में भी लाभ

एक किसान के पास एक खेत था। एक बार नदी में बहुत बाढ़ आई और खेत की मिट्टी बह गई। किसान बहुत दुखी हुआ। किंतु बही हुई जमीन के स्थान पर एक बड़ा तालाब बन गया। उसने बुद्धि से काम लिया और उस तालाब में कमल, सिंघाड़े जैसी बहुत चीजें पैदा होने लगीं।

किसान को विश्वास हो गया कि हर नुकसान के पीछे कोई लाभ भी छिपा रहता है। पुराना बिगड़ता है, तो नया ढलता भी है। बदलाव संसार का नियम है। जीवन में बहुत से उतार-चढ़ाव आते हैं। ईश्वर में विश्वास रखें। सभी परिस्थितियों के लिए तैयार रहें। प्रत्येक घटना में केवल बुरी बात ही नहीं होती, उसमें कुछ भलाई भी छिपी होती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घमंड से दूर रहो

बाप एक मूर्तिकार था। वह मूर्तियाँ बनाता और बाजार में बेचता था। बाप ने बेटे को भी मूर्तिकला ही सिखाई। दोनों हाट में जाते और अपनी-अपनी मूर्तियाँ बेचकर आते। बाप की मूर्ति डेढ़-दो रुपये की बिकती पर बेटे की मूर्तियों का मूल्य आठ-दस आने से अधिक न मिलता। हाट से लौटने पर बेटे को पास बिठाकर बाप उसकी मूर्तियों में रही हुई गलतियों को समझाता और अगले दिन उन्हें सुधारने के लिए कहता। इस प्रकार समझाते हुए कई वर्ष बीत गए। लड़का समझदार था, उसने पिता की बातें ध्यान से सुनीं और अपनी कला में सुधार करने का प्रयत्न करता रहा। कुछ समय बाद लड़के की मूर्तियाँ भी डेढ़ रुपये की बिकने लगीं। बाप अब भी उसी तरह समझाता और मूर्तियों में रहने वाले दोषों की ओर उसका ध्यान खींचता। बेटे ने और भी अधिक ध्यान दिया तो कला भी अधिक निखरी। मूर्तियाँ पाँच-पाँच रुपये की बिकने लगीं।

सुधार के लिए समझाने का क्रम बाप ने तब भी बंद न किया। एक दिन बेटे ने झुँझला कर कहा—"आप तो दोष निकालने की बात बंद ही नहीं करते। मेरी कला अब तो आप से भी अच्छी है, मुझे पाँच रुपये मिलते हैं जबकि आपको दो ही रुपये।" बाप ने कहा—"पुत्र! जब मैं तुम्हारी उम्र का था तब मुझे अपनी कला की पूर्णता का अहंकार हो गया और फिर मैंने भी सुधार की बात सोचना छोड़ दिया। तब से मेरी प्रगति रुक गई और दो रुपये से अधिक मूल्य की मूर्तियाँ न बना सका। मैं चाहता हूँ वह भूल तुम न करो। अपनी त्रुटियों को समझने और सुधारने का क्रम सदा जारी रखो ताकि बहुमूल्य मूर्तियाँ बनाने वाले महान कलाकारों की श्रेणी में पहुँच सको।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुण का महत्त्व

एक देहाती लड़का घर से नौकरी के लिए निकला। उसे लकड़ी काटने, पशु पालने जैसा घरेलू काम मिल गया। लड़के की मेहनत और ईमानदारी पर मालिक खुश था।

मालिक की लड़की विवाह योग्य थी। वह लड़के के गुणों पर मुग्ध थी, उसके साथ विवाह करना चाहती थी। प्रस्ताव उसके पिता के सामने रखा गया तो उसने स्पष्ट इनकार कर दिया। गरीब लड़के के हाथ अपनी बेटी का हाथ सौंपकर वह उसे दरिद्रता में डालना नहीं चाहता था।

उस घटना से लड़के को बहुत पीड़ा हुई। उसने उन्नति करना आरंभ कर दिया और २५ वर्ष बाद अमेरिका का राष्ट्रपति बन गया। नाम था उसका गारफील्ड।

लड़की के पिता को तब बहुत पश्चात्ताप हुआ और उसने पैसों की तुलना में गुणों का महत्त्व समझा।

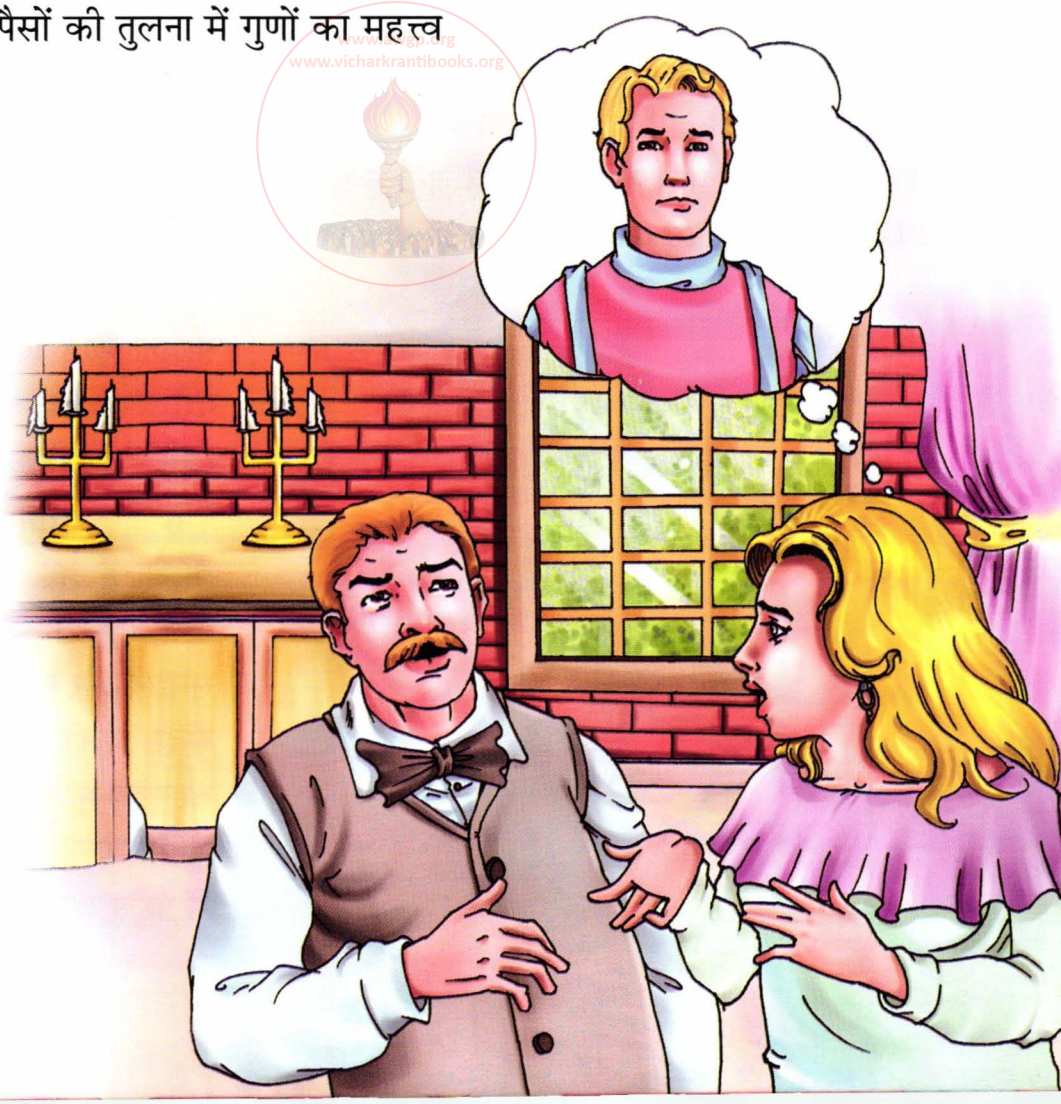

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पापियों का हित

एक बार ईसा बहुत छोटी जाति के पापी और खराब लोगों के साथ बैठे भोजन कर रहे थे। यह देखकर उनके एक विरोधी ने उनके शिष्य से कहा—"तेरे गुरु! जिसे तुम लोग भगवान का बेटा और पवित्र आत्मा बतलाते हो, इस प्रकार नीचों और पतितों से प्रेम करता है, उनके साथ बैठा भोजन कर रहा है। फिर भला तुम लोग किस प्रकार आशा कर सकते हो कि हम लोग उसका आदर और उसकी बात मानें।"

महात्मा ईसा ने विरोधी की बात सुन ली और विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया—"भाई! वैद्य की आवश्यकता रोगियों को होती है, स्वस्थ व्यक्तियों को नहीं। धर्म की आवश्यकता पापियों को तथा खराब आदमियों को होती है, उनको नहीं जो पहले से ही धार्मिक हैं। मैं धर्मात्माओं का नहीं, पापियों का हित करना चाहता हूँ। उन्हें मेरी बहुत जरूरत है।" बुरों को सही मार्ग पर लाना मेरा कार्य है।

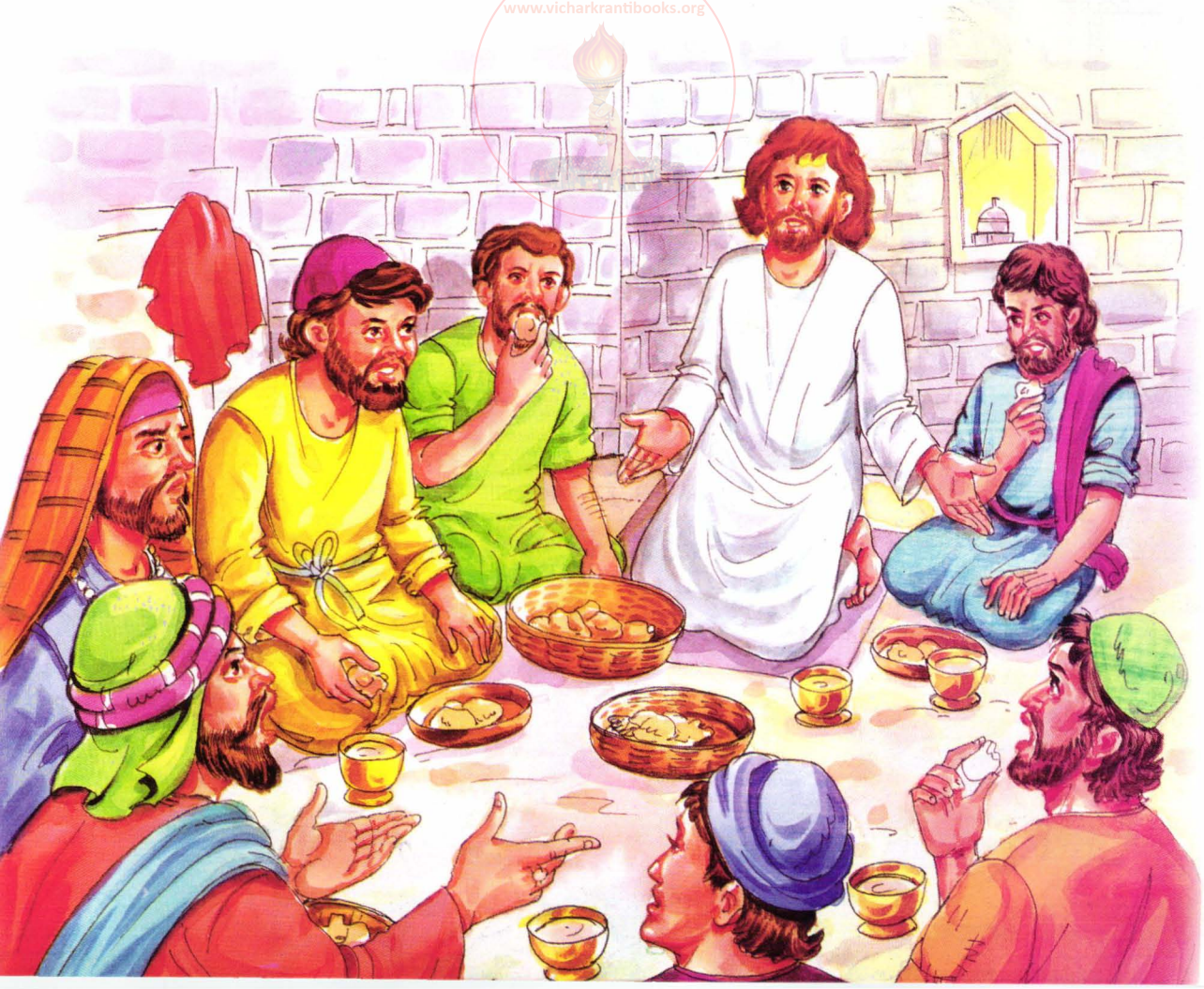

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म का सही अर्थ

एक शिष्य को अपने धार्मिक होने का अभिमान हो गया। गुरुजी ताड़ गए। धर्म का सही मर्म समझाने के लिए वे एक दिन एक सद्गृहस्थ के घर ठहरे। किसान एक आम लाया था, उसने वह आम अपनी धर्मपत्नी को दे दिया। बेचारी धर्म पत्नी ने भी उसे खाया नहीं, छोटे बच्चे को दे दिया। बच्चे ने आम गुरु चरणों में रख दिया तो गुरु ने शिष्य को बताया—"वत्स! धर्म का यह है सही अर्थ। जो कुछ तुम्हारे पास है, उसे उदारता से दूसरों को दो।"

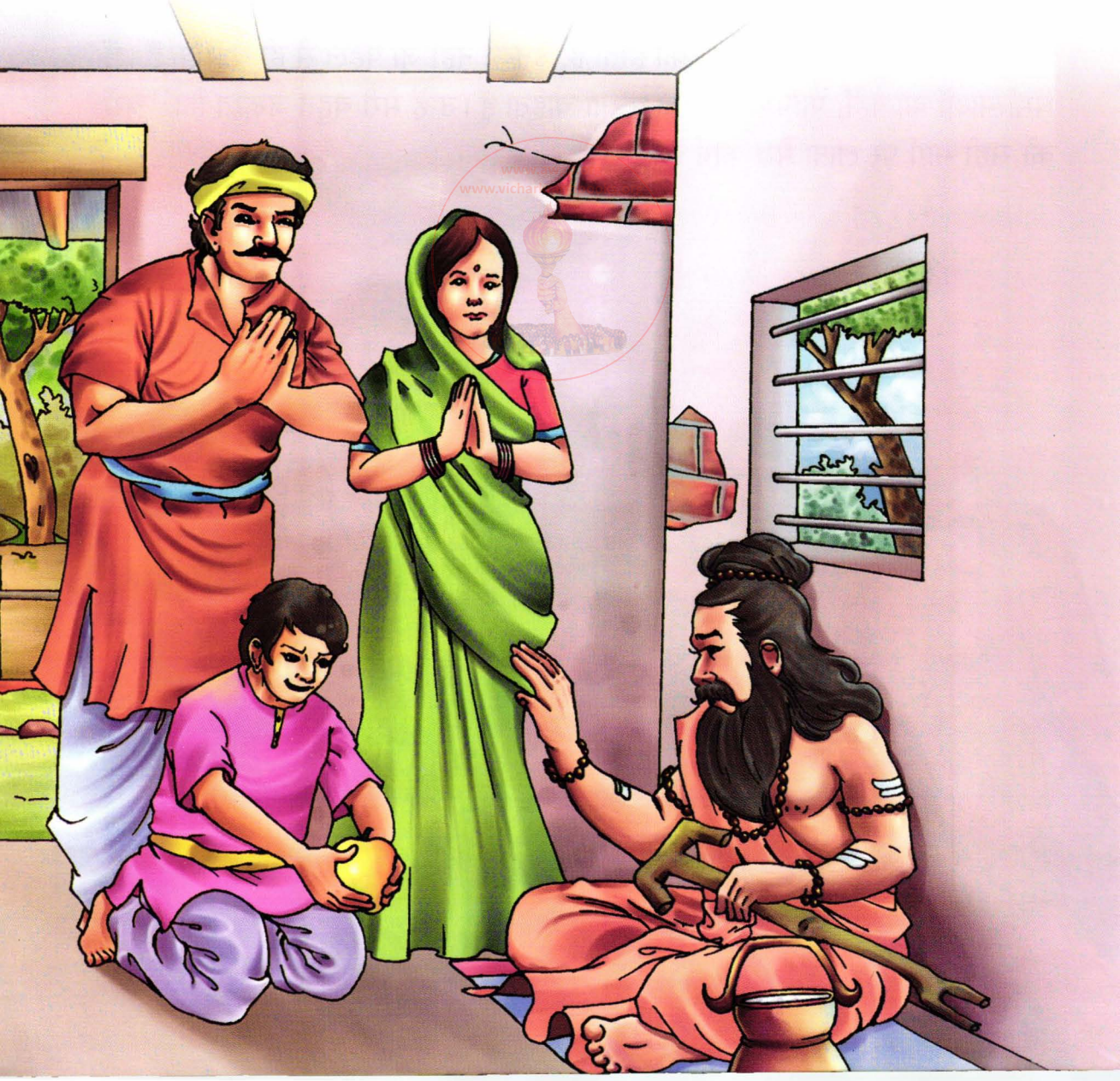

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फूल की सीख

एक फूलों का बगीचा था। वहाँ एक दिन फूल और काँटे में बातें होने लगीं। काँटा बोला—"बंधुवर पुष्प! लो सवेरा हुआ, माली इधर ही आ रहा है, अपनी सज्जनता, सरलता तथा उपकार की सजा भुगतने के लिए तैयार हो जाओ। यदि मेरी सीख मानते और कठोरता व कुटिलता का आश्रय ग्रहण किए रहते तो आज यह नौबत नहीं आती।"

फूल कुछ बोला नहीं, उसकी स्थिति और भी मोहक हो उठी। माली आया, उसने फूल को तोड़ा और डलिया में रखा। काँटा घमंड में हँसा, माली की वृद्ध उँगलियों में चुभा और अहंकार में ऐंठ गया। माली उसे गालियाँ बकता हुआ वापस लौट गया।

समय बीता। एक दिन देव-मंदिर में चढ़ाए उस फूल की सूखी काया को उठाकर कोई उसी वृक्ष की जड़ों के पास डाल गया। काँटे ने मुरझाए हुए पुष्प को देखा तो हँसा और बोला—"कहो तात! अब तो समझ गए कि परोपकारी होना अपनी ही दुर्गति कराना है।"

फूल की आत्मा बोली—"बंधु, यह तुम्हारा अपना विश्वास है। शरीरों में चुभकर दूसरों की आत्मा को कष्ट पहुँचाने के पाप के अतिरिक्त तुम अपयश के भी भागी बने। अंत तो सभी का सुनिश्चित है, किंतु अपने प्राणों को देवत्व में परिणत करने और संसार को प्रसन्नता प्रदान करने का जो श्रेय मुझे मिला, तुम उससे हमेशा के लिए वंचित रह गए। मैं हर दृष्टि से फायदे में हूँ और तुम घाटे में।"

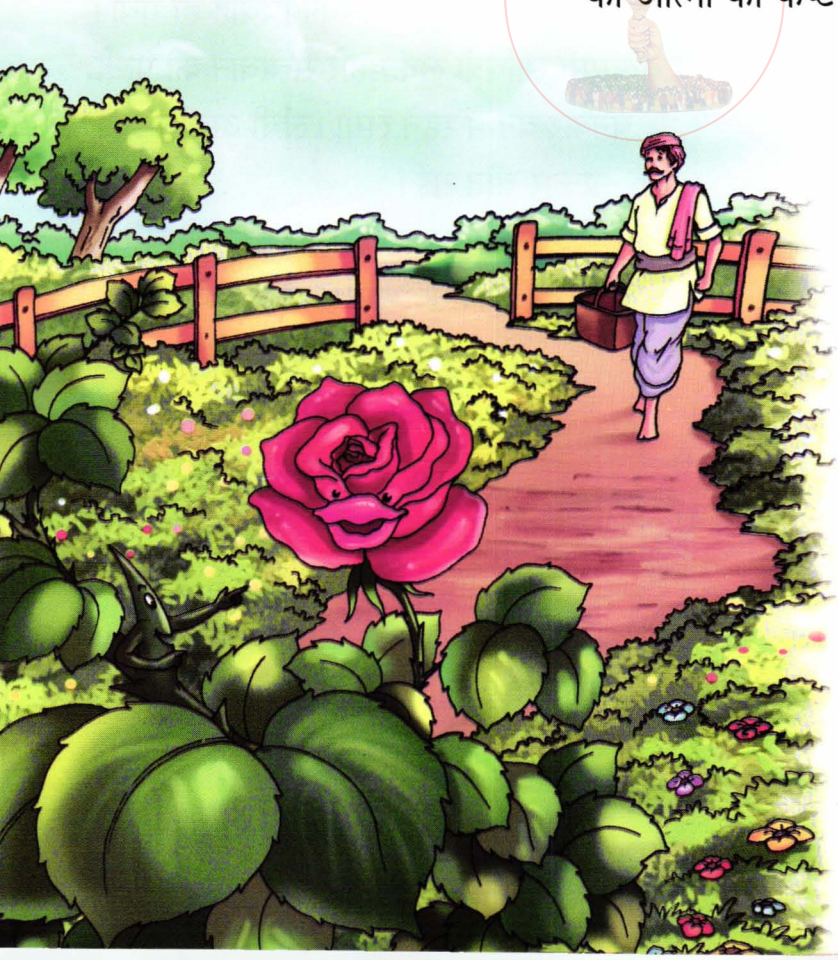

फूल की सचाई भरी बातें सुनकर काँटे ने सिर झुका लिया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सावित्री-सत्यवान

राजकुमारी सावित्री विद्वान, गुणवान तथा रूपवान थी। विवाह की आयु आने पर उसने किसी आदर्शवादी को साथी बनाने का निश्चय किया, वह मंत्रियों और रक्षकों के साथ योग्य वर की तलाश में स्वयं निकल पड़ी। खोजते-खोजते उसे रास्ते में एक युवा लकड़हारा मिला। चाल-ढाल से किसी सभ्य परिवार का दीखता था। रथ रोककर राजकुमारी ने पूछा, तो उसने बताया—"पिता-माता वानप्रस्थ लेकर इसी वन में साधना कर रहे हैं। घर में राजपाट है, उसे भाइयों को सौंपकर मैं माता-पिता की सेवा के लिए साथ आ गया हूँ। गुजारे के लिए लकड़ी काटने-बेचने का भी काम करता हूँ। शिक्षा मेरी पूरी हो चुकी है।"

राजकुमारी ने उसे अपने उपयुक्त माना और विवाह का प्रस्ताव रखा। इसके लिए युवक के माता-पिता को सहमत किया। साथी के साथ ऐसा मुसीबत से भरा जीवन अपनाने का निश्चय सुनाया। उनका विवाह हो गया। राजकुमारी सावित्री लकड़हारे सत्यवान की पत्नी बनकर वन में रहने लगी। लंबी अवधि इसी प्रकार बीत गई।

राजकुमार का मृत्यु का समय आ पहुँचा। राजकुमार को यम लेने आए; पर ऐसे आदर्शवादी जोड़े पर हाथ डालने का उनका भी मन न हुआ। निकाले हुए प्राण उन्होंने वापस लौटा दिए। सावित्री की आदर्शवादिता ने यम जैसे कठोर को पिघला दिया और इतिहास को धन्य कर दिया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सबमें ईश्वर है

किसी कोतवाल को दादू महाराज से मिलना था। रास्ते में एक आदमी मिला जो सड़क के काँटे साफ कर रहा था।

कोतवाल ने उससे कड़ककर पूछा—"क्यों रे, दादू महाराज कहाँ रहते हैं?"

दादू जी ने इशारे से बता दिया कि सामने वाली झोंपड़ी उन्हीं की है।

रूखा जवाब सुनकर कोतवाल नाराज हुए और गाली देते हुए झोंपड़ी की ओर चले गए। सिर पर काँटे का गट्ठा लादे दादू पहुँचे तो कोतवाल ने देखा कि ये ही दादू हैं तो गाली देने का दुःख हुआ और क्षमा माँगी।

दादू ने कहा—"इसमें आपका कोई दोष नहीं। दोष तो उस मनुष्य संबंधी मान्यता का है, जो आपके मुख से ऐसे वचन निकालती है। मनुष्य मात्र में आप ईश्वर को देखने लगेंगे तो यह आदत स्वतः छूट जाएगी।"

कोतवाल ने उनकी बात गाँठ बाँध ली। इसके बाद उसका जीवन ही बदल गया। वह गरीब-अमीर सब में ईश्वर का दर्शन करते हुए उनसे प्रेम और सहानुभूति भरा व्यवहार करने लगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राजकुमार की दुष्टता

एक राजकुमार बड़े दुष्ट स्वभाव का था। एक दिन नदी में नहाते उसका पैर फिसला और बह गया। संयोगवश एक लकड़ी का मोटा लट्ठा बहता आ रहा था। उस पर एक सर्प, एक चूहा भी बहते-बहते चढ़ गए थे। राजकुमार का भी दांव लग गया और वह भी उस पर चढ़ गया। नदी के तट पर एक साधु की कुटिया थी। उसने लट्ठे के साथ बहते प्राणियों को देखा, तो जान जोखिम में डालकर लट्ठे को किनारे पर खींच लाए। रात्रि डरावनी काली थी और उस रात ठंढक भी कड़ाके की थी। सो उसने लट्ठे को एक ओर से जलाकर गरमी उत्पन्न की। तीनों प्राणियों को तपाया और जो कुटिया में था, तीनों को खाने के लिए दिया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भोर होने पर वर्षा थमी, तो सर्प ने साधु से कहा—"मेरा नाम मधुप है, इसी जंगल में रहता हूँ। आवश्यकता हो तो पुकारना। मेरे बिल में धन है, सो दूँगा।"

चूहे ने भी साधु महाराज के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की और कहा—"जब आपको ईंधन की आवश्यकता हो, तब आवाज दें, समीप ही रहता हूँ, मेरा नाम कुसुम है। पौधे और टहनियाँ काटकर आपके लिए लकड़ियाँ जुटा दिया करूँगा।"

अब राजकुमार की बारी थी। राजकुमार ने कड़ककर कहा—"तुमने मेरा उचित सम्मान नहीं किया, सो बदला लूँगा।" घर पहुँचते ही उसने नौकर भेजे और साधु की झोंपड़ी तोड़-फोड़कर फिंकवा दी। उन्हें कहीं और दूसरी बनवानी पड़ी। वे सोचते रहे, कृतघ्न की तुलना में तो साँप और चूहे ही अच्छे हैं।

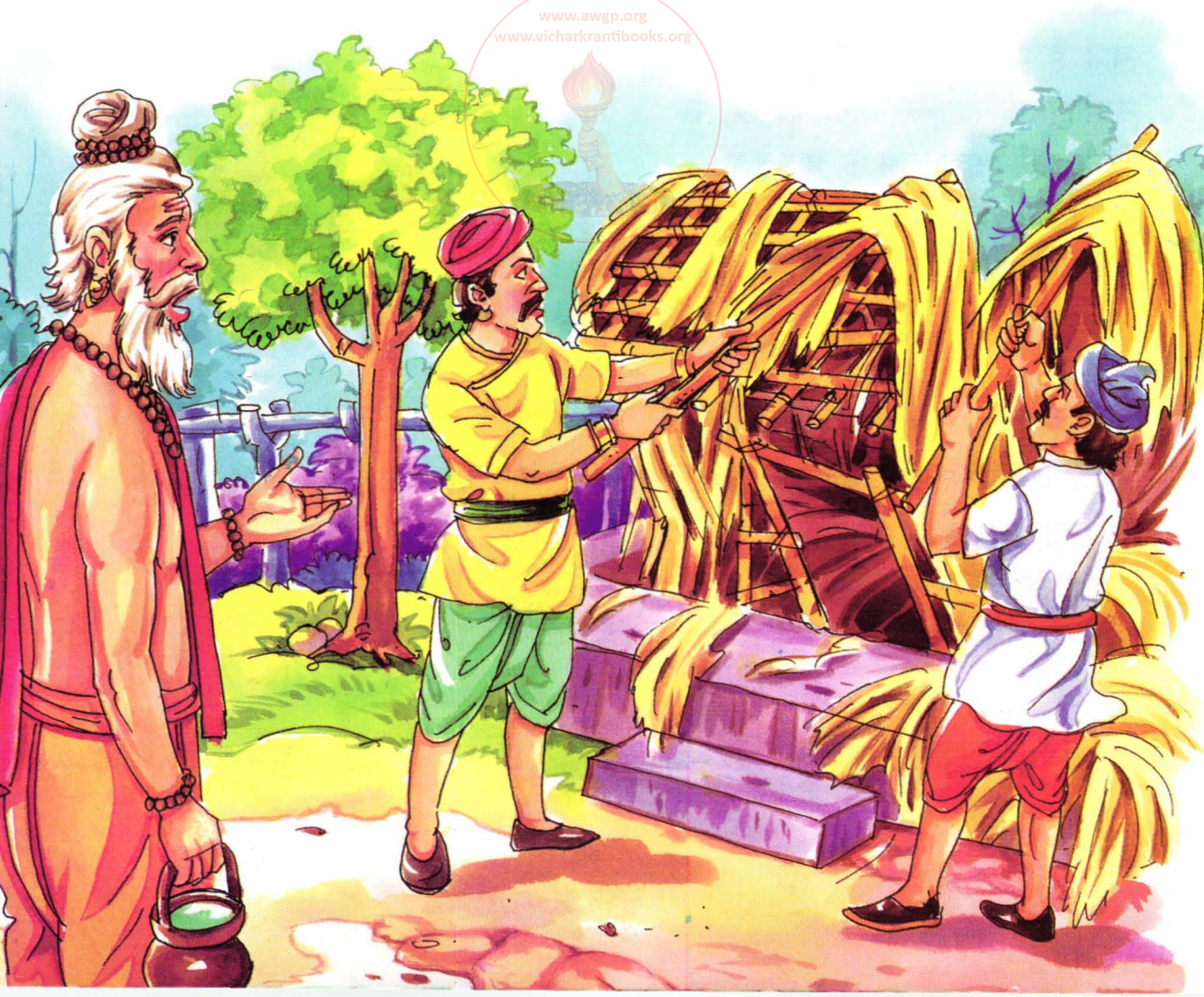

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूझ-बूझ का महत्त्व

स्पेन के नाविक कोलंबस ने बहुत साहस दिखाया और नौका के द्वारा ही अमेरिका महाद्वीप को खोज निकाला। उसकी कीर्ति सब ओर फैली। लौटने पर सम्मानपूर्वक अनेक समारोह हुए। ऐसे ही एक प्रीतिभोज में एक ने किसी दूसरे से कहा—"यह कौन सी बड़ी बात है ? अटलांटिक पार किया कि अमेरिका आ गया। इतने सरल काम के लिए इतने सम्मान की क्या जरूरत ?"

भोज समाप्त होने पर कोलंबस ने एक उबला अंडा मेज पर रखा और कहा—"आप में से कोई सज्जन इसे सीधा खड़ा कर देने की कृपा करें।"

सभी ने बहुत अक्ल दौड़ाई, कोशिश की पर वैसा न हो सका, जैसा कि करने के लिए कहा गया था। कोलंबस ने अंडे का एक सिरा उँगली से तोड़कर समतल किया व उसे मेज पर खड़ा कर दिखाया। कई व्यक्ति जोर से चिल्ला उठे—"इसमें कौन सी बड़ी बात है यह तो हम भी कर सकते थे।" कोलंबस ने नम्रतापूर्वक कहा—"कर सकते थे, पर किया नहीं। सूझ-बूझ के अभाव में सरल दीख पड़ने वाला काम भी असंभव हो जाता है। महत्त्व श्रम का ही नहीं, सूझ-बूझ का भी होता है। आप भी अमेरिका की खोज कर सकते थे पर मैंने सूझ-बूझ के सहारे उसे खोज लिया। वह रास्ता तो सबके लिए खुला पड़ा है।"

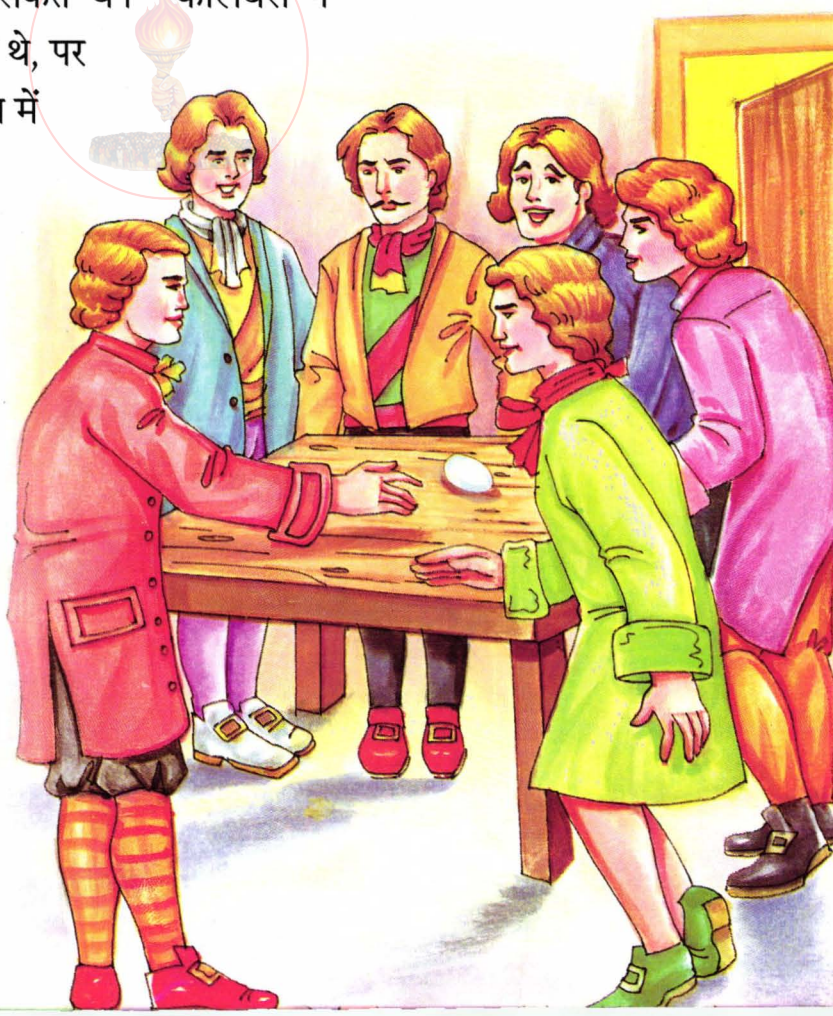

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शास्त्री जी का परिवार शिक्षण

सन् १९४९ की बात है। उन दिनों लालबहादुर शास्त्री उत्तर प्रदेश सरकार के गृहमंत्री थे। एक दिन लोक निर्माण विभाग के कुछ कर्मचारी उनके निवास स्थान पर कूलर लगाने आए। बच्चों को बड़ी प्रसन्नता हुई कि अबकी बार गरमियाँ अच्छी तरह गुजर जाएँगी।

जब शाम को शास्त्री जी घर आए , तो उन्हें पता चला कि कूलर लगाया जा रहा है, उन्होंने तुरंत विभागीय कर्मचारियों को टेलीफोन पर मना कर दिया। पत्नी ने कहा—"जो सुविधा बिना माँगे मिल रही है, उसके लिए मना करने की क्या आवश्यकता है ?"

शास्त्री जी ने कहा—"यह आवश्यक नहीं कि मैं मंत्री पद पर सदा बना रहूँगा, फिर इससे आदत बिगड़ जाएगी। कल लड़कियों की शादी करनी है, मानलो विवाहोपरांत इस तरह की सुविधाएँ न मिलीं तो उन्हें कष्ट ही होगा। जाने किस स्थिति में उन्हें रहना पड़े"।

शास्त्री जी ने सारी शिक्षा अपनी माँ से ग्रहण की थी एवं वही शिक्षण अपने परिवार में भी दिया, ताकि बच्चे सद्गुणी बन सकें। पिता के पद का लाभ उठाकर सुविधाओं के अभ्यस्त न हो जाएँ। हर परिस्थिति में अपने को ढाल सकें।

यही कारण था कि वे स्वयं राष्ट्र के सर्वोच्च पद पर पहुँच सकने में सफल हुए एवं अपने बच्चों को भी संस्कार दे सके।

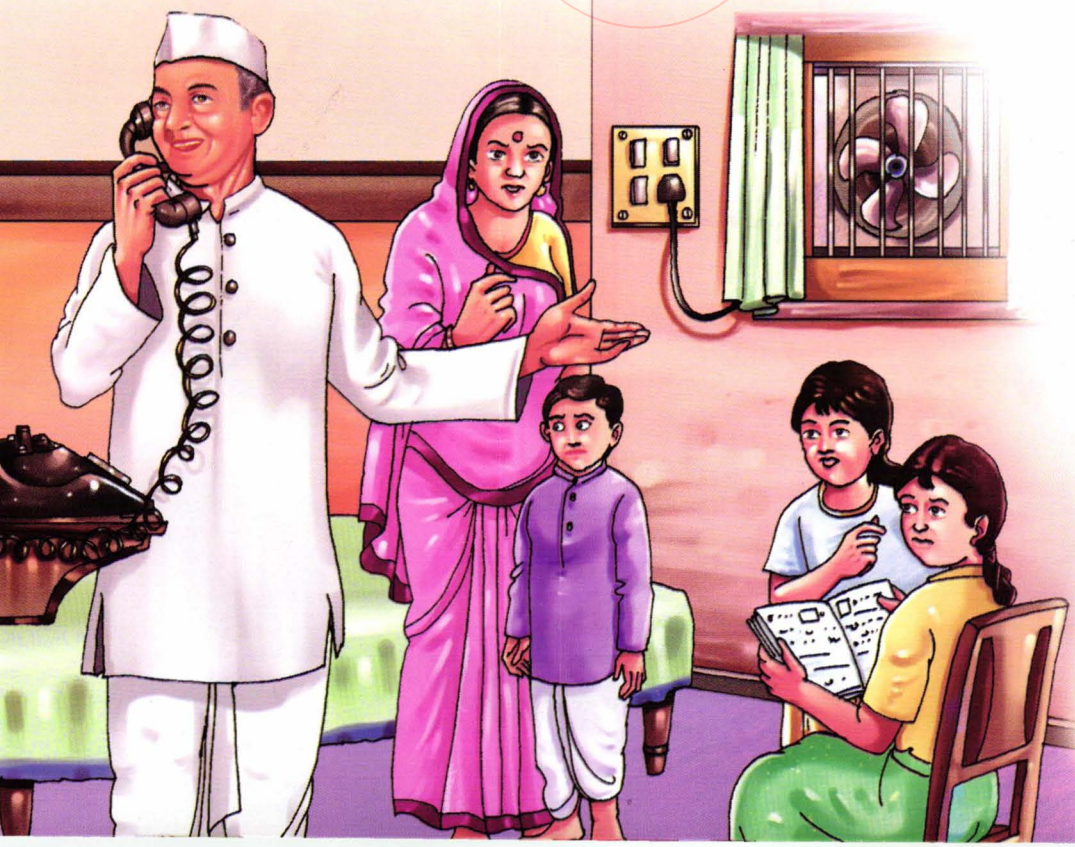

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नदी और चट्टान

नदी की धारा बहती चली जा रही थी। उसके रास्ते में चट्टान बैठी थी। वह नदी का प्रवाह रोककर बोली—"बहन! थोड़ी देर सुस्ता लो। तुम थक गई होगी। तुम्हारी उदारता की कोई सराहना तक नहीं करेगा, क्यों इतना परिश्रम कर रही हो?"

नदी ने चट्टान की बात को ध्यान से सुना। उसने उसकी सद्भावना को सराहा। पर रुकी नहीं, बोली—"इस कार्य में जो आत्मसंतोष मिलता है, वही क्या कम है? मैं लोगों की भलाई-बुराई को देखने का प्रयत्न क्यों करूँ।"

सत्पुरुषों को केवल अपने लक्ष्य पर बढ़ना आता है। वे महानता के रास्ते पर निष्काम भाव से बढ़ते ही जाते हैं। बदले का भाव तो सामान्य जन करते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर की अनुभूति

श्वेतकेतु अपने गुरु उद्दालक से ईश्वर दर्शन के लिए हठ करने लगा। गुरु ने एक मुट्ठी नमक लेकर पानी में मिला दिया और कहा—"चखो!" पानी नमकीन था। पर नमक दीखता न था।

गुरु ने कहा—"भगवान इस सारे संसार में इसी प्रकार घुला हुआ है। उसे अनुभव तो किया जा सकता है पर देखा नहीं जा सकता।"

याद रखें—भगवान की अनुभूति निर्मल मन में ही होती है।

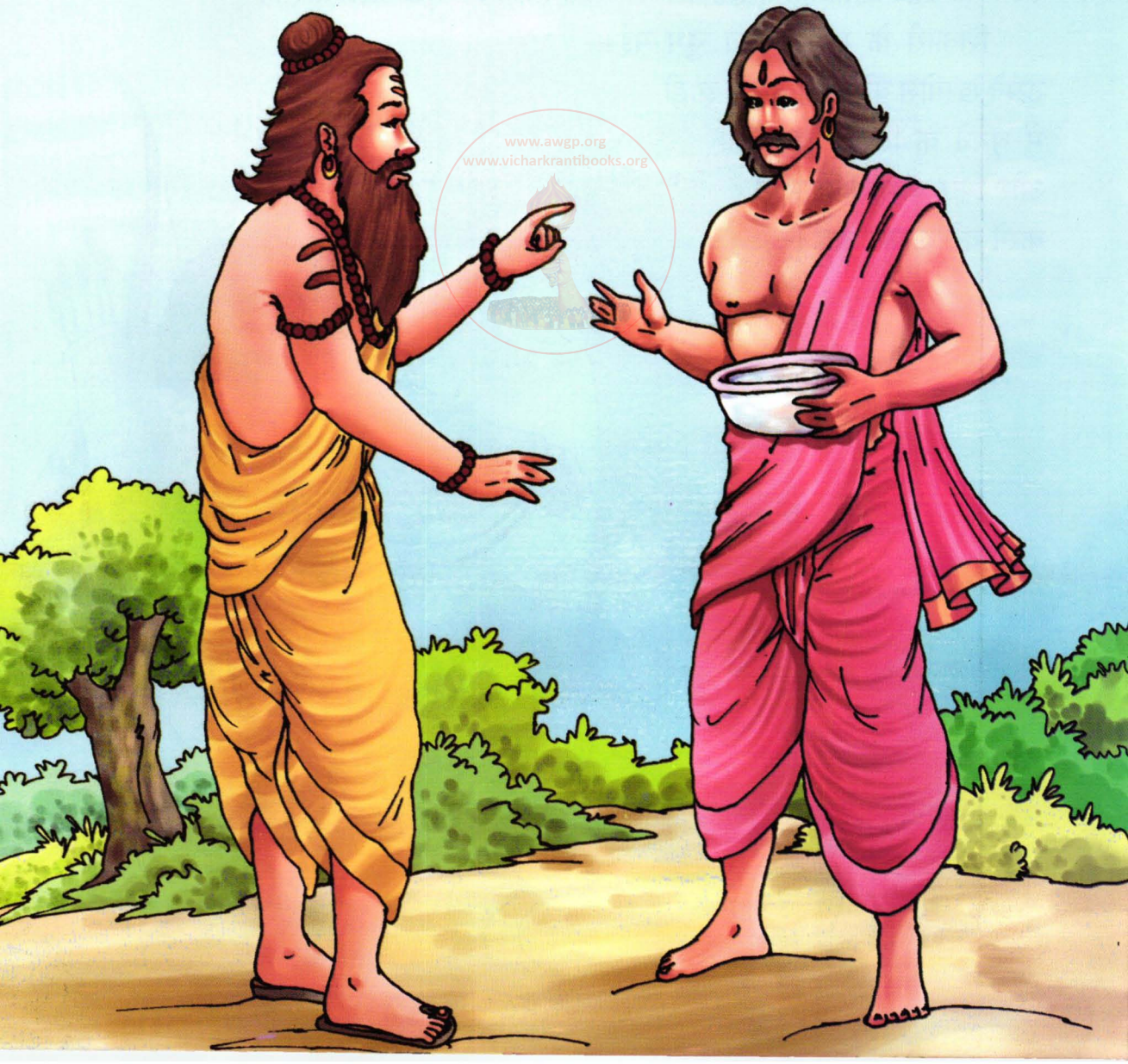

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नेकी का रास्ता चुनो

एक शिकारी तीर कमान लेकर शिकार मारने निकला पर उस दिन कोई बड़ा जानवर हाथ न लगा। एक छोटा खरगोश भर पकड़ सका तो उसे घोड़े पर लादकर वापस लौट पड़ा। वह अपने गाँव का रास्ता भूल गया। उसने पेड़ के नीचे बैठकर चिड़ियाँ चुगा रहे लड़के से पूछा—"क्या तुम मेरे गाँव का रास्ता बता सकते हो?"

लड़के ने कहा—"मैंने दो ही रास्ते सुने हैं—एक नरक का रास्ता जो तुम्हारे जैसे बेरहम लोगों को बिना किसी से पूछे मिल जाता है। दूसरा मेरी तरह नेकी करने का जो स्वर्ग की ओर जाता है। तुम्हें जिस पर जाना हो, बिना पूछे चले जाओ।"

शिकारी के मन में बात चुभ गई। उसने खरगोश को नजदीक की झाड़ी में घूमने के लिए छोड़ दिया और फिर कभी शिकार न करने की कसम खाई।

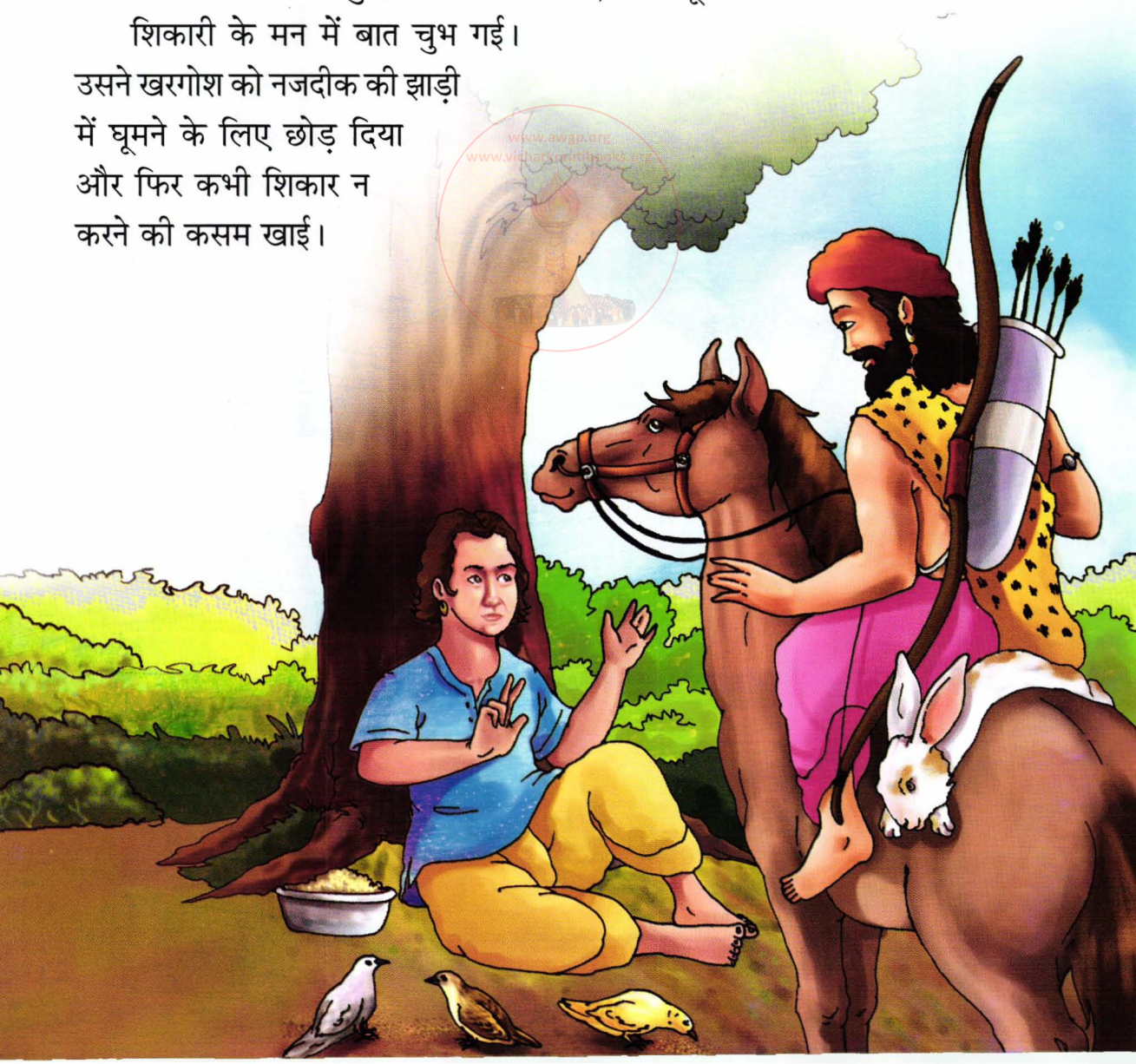

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संकल्प बोल उठा

एक खेत में एक लोमड़ी व उसके दो बच्चे रहते थे। एक दिन किसान और उसका बेटा दोनों मेंड़ पर घूम रहे थे। पिता बोला—"बेटा, खेत पक गया है। कल नौकरों को बुला लाना, खेत काट लेंगे।" लोमड़ी के बच्चे डर गए, माँ से सारा हाल कह सुनाया। लोमड़ी बोली—"अभी चिंता करने की बात नहीं।"

दूसरे दिन नौकर न पहुँचे, बाप बोला—"बेटा, कल अपने पड़ोसियों को ही ले आना, कल जरूर खेत काटना चाहिए।"

लोमड़ी के बच्चे फिर भागने की हठ करने लगे पर लोमड़ी ने इस बार भी मना कर दिया। तीसरे दिन किसान बोला—"भाई, दूसरों के सहारे कब तक बैठें। कल हँसिया ले आना हम दोनों ही काटेंगे।" किसान हँसिया लेकर आए इससे पहले ही लोमड़ी ने स्वयं ही बच्चों को बुलाया और बोली—"बेटे, चलो अब खेत खाली कर दो।" बच्चों ने विस्मित होकर पूछा—"माँ! हम लोग दो दिन से कह रहे हैं, तब तो तुम चली नहीं, आज अपनी ओर से ही चलने को कह रही हो।" लोमड़ी ने कहा—"बच्चो! औरों से जो काम कराया जाता है, उसमें देर हो सकती है परंतु व्यक्ति जब स्वयं कोई कार्य करने का निर्णय करता है तो वह शीघ्र हो जाता है। और दिन किसान बोलता था पर आज तो उसका संकल्प बोल गया है। संकल्पवान जो चाहें कर सकते हैं। इसलिए अब यहाँ से तुरंत भागने में ही हमारी भलाई है।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुढ़िया की सीख

शिवाजी उन दिनों मुगलों के विरुद्ध छापामार युद्ध लड़ रहे थे। रात को थके-माँदे वे एक वनवासी बुढ़िया की झोपड़ी में जा पहुँचे और कुछ खाने-पीने की याचना करने लगे। बुढ़िया के घर में चावल थे सो उसने प्रेमपूर्वक भात पकाया और पत्तल पर परस दिया। शिवाजी बहुत भूखे थे। सो सपाटे से भात खाने की आतुरता में उँगलियाँ जला बैठे, मुँह से फूँककर जलन शांत करनी पड़ी। बुढ़िया ने आँखें फाड़कर देखा और बोली—"सिपाही, तेरी शक्ल शिवाजी जैसी लगती है और साथ ही यह भी लगता है कि तू उसी की तरह मूर्ख भी है।" शिवाजी स्तब्ध रह गए। उनने बुढ़िया से पूछा—"भला शिवाजी की मूर्खता तो बताओ और साथ ही मेरी भी।"

बुढ़िया ने कहा—"तूने किनारे-किनारे से थोड़े-थोड़े ठंढे चावल खाने की अपेक्षा बीच के सारे भात में हाथ मारा और उँगलियाँ जला लीं। यही बेअक्ली शिवाजी करता है। वह दूर किनारों पर बसे छोटे-छोटे किलों को आसानी से जीतते हुए शक्ति बढ़ाने की अपेक्षा बड़े किलों पर धावा बोलता है और मात खाता है।" शिवाजी को अपने युद्ध में न जीत पाने का कारण पता चल गया। उन्होंने बुढ़िया की सीख मानी और पहले छोटे-छोटे राज्यों व किलों को जीता, फिर बड़े किलों पर धावा बोला और जीतता गया। छोटी सफलताएँ पाने से उनकी शक्ति बढ़ी और अंततः बड़ी विजय पाने में समर्थ हुए।

शुभारंभ जब छोटे-छोटे कदमों से होता है तो विजय अवश्य मिलती है।

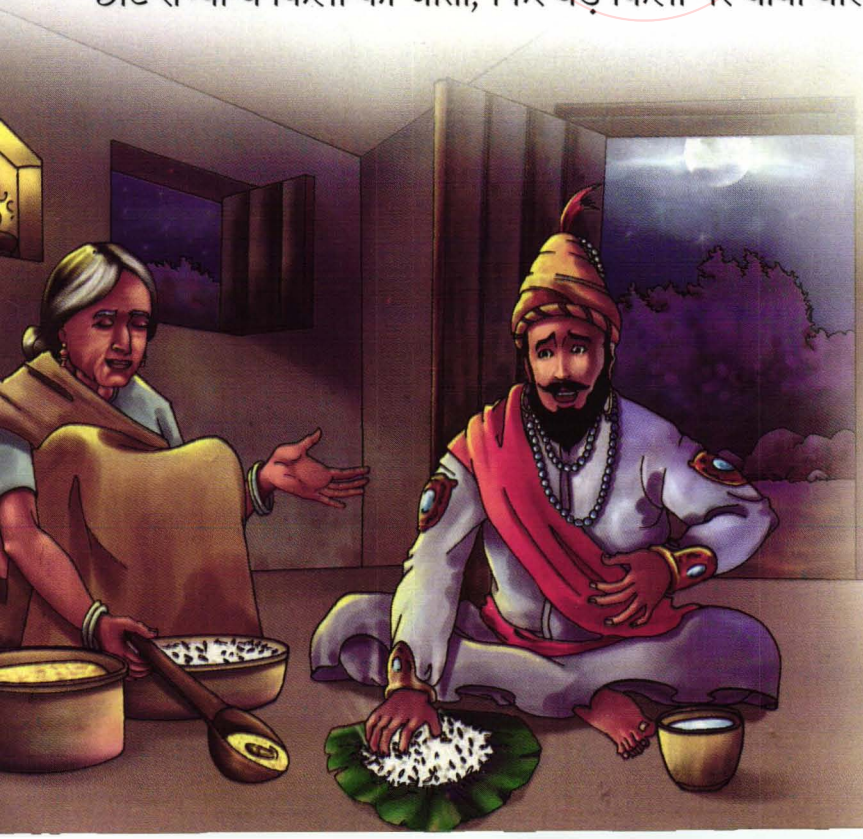

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जैसा किया वैसा मिला

दो भक्तों ने संन्यास ले लिया। भोजन के लिए वे भगवान पर निर्भर रहे।

एक दिन एक किसान दोनों के लिए कपड़े से ढककर दो थालियों में भोजन लाया।

उन लोगों ने थालियाँ खोलीं तो एक में रूखी-सूखी रोटियाँ थीं और दूसरी में सोलह प्रकार के खाने थे। यह भेदभाव देखकर एक साधु ने पूछा—"इस अंतर का क्या कारण है?" किसान ने कहा—"यह आप लोगों ने जैसा किया वैसा मिलेगा। एक सूखी रोटी छोड़कर संन्यासी बना है और दूसरा व्यंजन छोड़कर साधु बना है। साधु हो जाने पर भी आप लोगों के पूर्व संस्कार साथ चलेंगे। दोनों साधुओं ने उसे प्रणाम किया, गुरु माना व आगे चल पड़े।

संचित संस्कार अनायास ही नहीं जाते। मन में उनकी स्मृति बराबर बनी रहती है। जैसा हम सोचते हैं, वैसा ही पाते भी हैं।

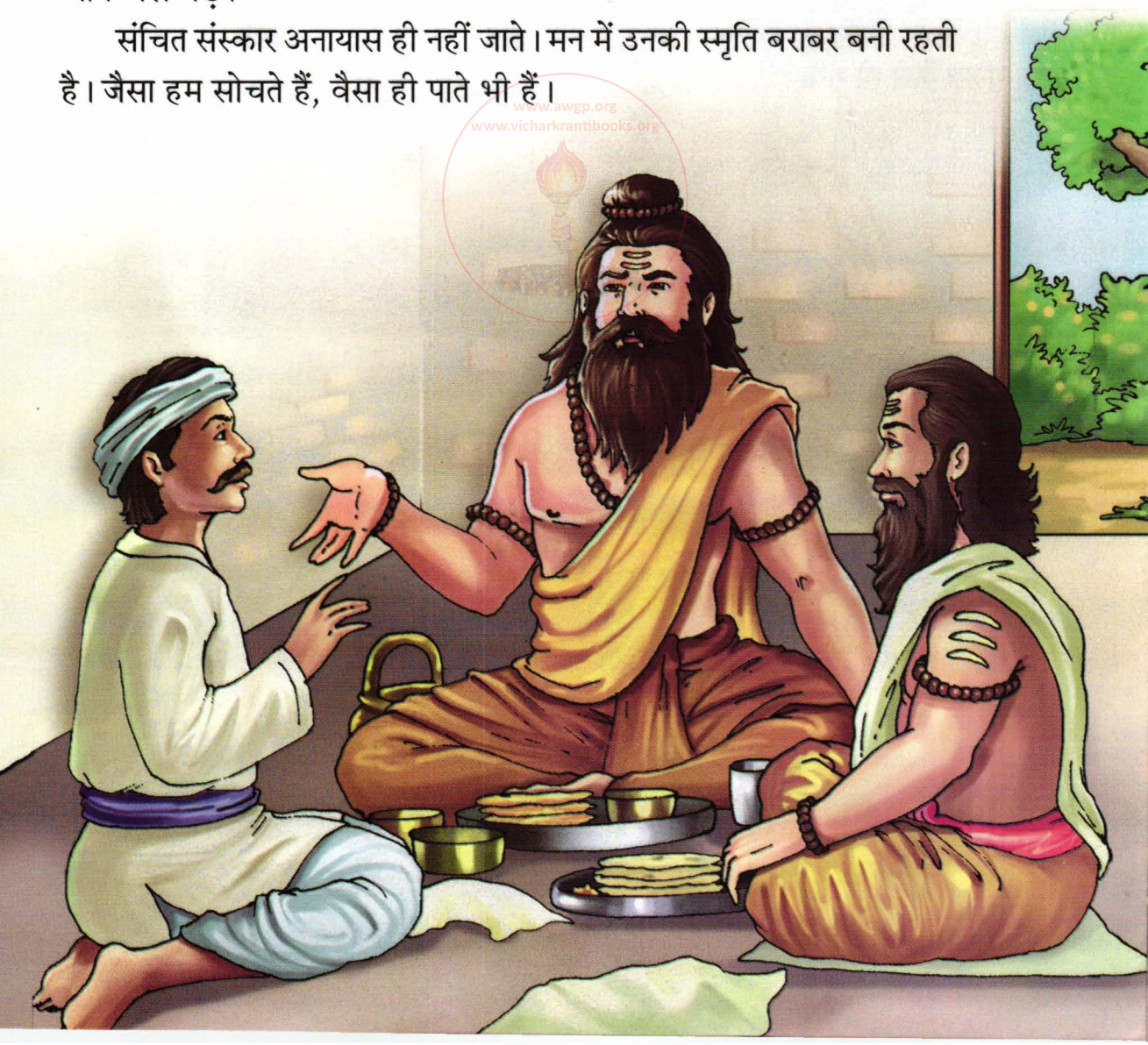

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सेवा—प्राथमिक धर्म

एक गिद्ध था। उसके माता-पिता अंधे थे। गिद्ध रोज सूर्योदय पर निकल जाता, अपना पेट भरता और अपने अंधे बूढ़े माता-पिता के लिए भी खोज-खोजकर मांस के टुकड़े लाता था। एक दिन नदी के किनारे बहेलिये ने जाल डाला और गिद्ध आकर उसमें फँस गया। वह तड़फड़ाया, मगर उसकी सब कोशिशें बेकार रहीं। गिद्ध को अपने जाल में फँस जाने का दु:ख इतना नहीं था, जितना उसे अपने माता-पिता के भूखों मर जाने का भय था। वह जोर-जोर से विलाप करने लगा। बहेलिये ने गिद्ध के पास जाकर पूछा कि वह क्यों परेशान है ? गिद्ध ने अपनी व्यथा कही। बहेलिये ने ताना मारा—"रे गिद्ध! तेरी बात मेरी समझ में नहीं आई। गिद्धों की दृष्टि तो इतनी तेज होती है कि सौ योजन ऊपर आसमान से भी मुरदा चीजों को देख लेती हैं, लेकिन तू तो निकट बिछे जाल को ही नहीं देख पाया, ऐसा गजब कैसे हो गया ?"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस पर गिद्ध बोला—''बहेलिये ! बुद्धि की लगाम जब तक अपने हाथ में रहती है, तब तक मनुष्य जाल में नहीं फँसता। किंतु जब बुद्धि पर लोभ का अधिकार हो जाता है, तो थोड़ा रास्ता भूल जाता है। जीवन भर मांस पिंड के पीछे ही भागते-भागते मेरी नजर में मांस पिंड ही सब कुछ बन गए हैं। उनके सिवाय मुझे और कुछ दिखलाई ही नहीं पड़ता है। दृष्टि जब इतनी सँकरी हो जाती है, तो सही रास्ता दिखाई नहीं देता। तेरे जाल को नहीं देख सकने का कारण यही है। लेकिन अब ज्ञान का उदय होने से क्या होगा ? किए का फल भोगना ही पड़ेगा।'' बहेलिये को गिद्ध की बात भायी। उसने प्रसन्न होकर कहा—''गिद्धराज ! जाओ, मैं तुम्हें आजाद करता हूँ। अपने अंधे माता-पिता की सेवा करो। तुमने आज मेरी भी आँखें खोल दीं।''

लोभ के कारण मनुष्य भी सही-गलत का विवेक खो बैठता है और मुसीबत में फँस जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहले समाज के लिए

इंदौर में हिंदी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन महात्मा गांधी के सभापतित्व में हुआ। नगर सेठ हुकुमचंद ने महात्मा गांधी और उनके सहयोगियों को भोजन के लिए आमंत्रित किया। आगंतुकों के लिए शानदार आसन, चाँदी के बरतन, बहुत ही सुंदर साज-सज्जा की गई। महात्मा गांधी के लिए सोने के बरतन थे। बापू मुस्कराए। वे अपने बरतन उन दिनों एल्यूमीनियम के रखते थे। कस्तूरबा से बरतनों का थैला माँगकर उन्हीं को भोजन के लिए रख लिया और सोने के बरतन वापस कर दिए। सेठ जी ने सोने के बरतनों में खाने की जिद की, तो गांधी जी ने यही कहा—"जो वस्तु गरीबों को मिल सकती है, उसी का मैं उपयोग करता हूँ।" सेठ हुकुमचंद्र ने सोने के बरतन देश के काम में प्रयुक्त करने के लिए गांधी जी को दे दिए, तभी उनने उनमें भोजन करना स्वीकार किया।

लोकसेवियों का स्वार्थ भी परमार्थ के लिए होता है। वे जहाँ धन संचय देखते हैं, वहाँ प्रेरणा फूँकते हैं,ताकि वह धन सत्प्रवृत्ति बढ़ाने के काम आ सके।

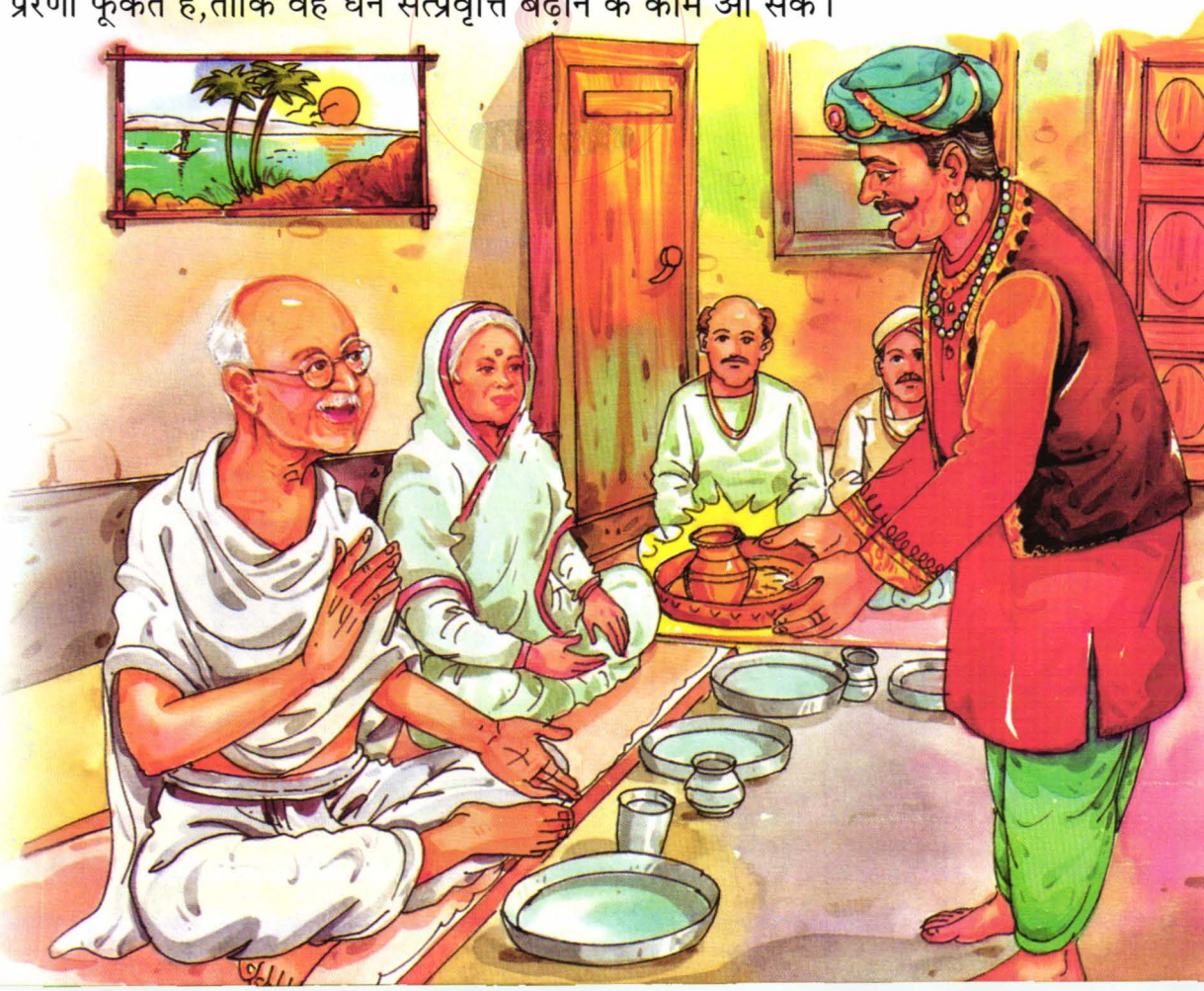

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चोर की दाढ़ी में तिनका

एक बहुत बूढ़े आदमी ने दूसरा विवाह किया। उसकी पहली पत्नी से एक पुत्र भी था, जो आयु में छोटा था। बूढ़ा मरने लगा, तो विश्वास न किया और एक पुराने दास को बुलाकर जंगल का वह स्थान दिखाया, जिसमें पेड़ के नीचे उसने अपना धन गाड़ा था, कहा—"पुत्र के बड़े हो जाने या आवश्यकता पड़ने पर यह धन उसे बता देना।" मृत्यु के कुछ समय उपरांत घर में तंगी आई और धन की आवश्यकता पड़ी। दास का भी ईमान डगमगा गया। धन पूछने पर वह उस पेड़ के नीचे तो खड़ा हो जाता, पर यह कहता कि मुझे याद नहीं, वह पेड़ कौन सा है?" कई बार उसने यही किया। लड़का चतुर था। उसने सोचा बार-बार जिस पेड़ के नीचे दास खड़ा होता है, उसी के नीचे धन होना चाहिए। एक दिन उसने यह समझकर वहाँ खोदा और धन मिल गया। माँ ने पूछा—"तुमने यह कैसे जाना?" बेटे ने कहा—"चोर की दाढ़ी में तिनका होता है।"

कितना ही प्रयास किया जाए, पाप कभी छिपा नहीं रह सकता। व्यक्ति को अपने विवेक से भी काम लेना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माता का प्रभाव

चित्तौड़ के राजकुमार एक चीते का पीछा कर रहे थे। वह चोट खाकर झाड़ियों में जा छिपा था। राजकुमार घोड़े को झाड़ी के इर्द-गिर्द घुमा रहे थे पर छिपे चीते को बाहर निकालने में वे सफल न हो पा रहे थे। एक किसान की लड़की यह दृश्य देख रही थी। उसने राजकुमार से कहा—"घोड़ा दौड़ाने से हमारा खेत खराब होता है। आप पेड़ की छाया में बैठें। चीते को मारकर मैं लाए देती हूँ।" वह एक मोटा डंडा लेकर झाड़ी में घुस गई और मल्ल-युद्ध से चीते को पछाड़ दिया। उसे घसीटते हुए बाहर ले आई और राजकुमार के सामने पटक दिया।

इस बहादुरी और पराक्रम पर राजकुमार दंग रह गए। उन्होंने किसान से विनय करके उस लड़की से विवाह कर लिया। महान योद्धा हमीर उसी लड़की की कोख से पैदा हुए थे। जैसी माता होती है, वैसी ही संतान का जन्म होता है। सद्गुणी संस्कारी माता ही श्रेष्ठ संतान की जननी बनती है। वह अपने गुण, कर्म और स्वभाव के अनुरूप ही संतान को जन्म देती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org